International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 04
February 2016

अफ्रीका में भारत के हित : रणनीति का नया क्षेत्र

पूजा
रिसर्च स्कोलर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
म0द0विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध सारः

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मैंने भारत–अफ्रीका संम्बन्धों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इसमें यह भी बताया है कि किस प्रकार अफ्रीका भारत के लिए संभावनाओं भरा क्षेत्र है यह आर्थिक, राजनीतिक, व सामरिक दृष्टिकोण से किस प्रकार भारत के लिए लाभकारी है। इसमें मैंनें भारत–अफ्रीका के बीच हुये शिखर सम्मेलन के सम्बन्धों के महत्व को स्पष्ट किया है तथा उन बातों पर भी ध्यान दिया है जिसने भारत अफ्रीका महाद्वीप में अपनी स्थिति को बेहतर बना सकेगा।

मुख्य शब्दः इण्डो – अफ्रीका, स्प्रिंग ऑफ पर्ल्स, राजनायिक सम्मेलन, आर्थिक कोरिडोर।

भूमिकाः गरीब और अल्पविकसित देश होते हुये भी अफ्रीका का क्षेत्र भारत के लिऐ बहुत ज्यादा महत्त्व रखता है। यह विश्व की लगभग 17 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाला द्वीप है जो विश्व के 18 प्रतिशत भूक्षेत्रीय सतह को घेरे हुये है। भौगोलिक दृष्टि से यह हिन्द महासागर के किनारे पर अवस्थित है। एशिया महाद्वीप से यह हिन्द महासागर के कारण अलग हुआ है अतः इसका सहयोग इस क्षेत्र में विकास हेतू अत्यन्त आवश्यक है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 04
February 2016

भारत के लिए शुरू से ही अफ्रीका एक महत्व का क्षेत्र रहा है, इसका महत्व भारत के अपने नीजी हितों के कारण नही बल्कि एक बहुत बड़ी मानव जाति को सम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के चंगुल से छुड़ाने के लिये भारत प्रयासरत रहा। भारत और अफ्रीका के रिश्ते बहुत पुराने रहे है और आधुनिक समय में भी भारतीय मूल के लोगों ने अफ्रीका विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हे। महात्मा गाँधी जी ने उपनिवेशवाद, सम्राज्यवाद नस्लवाद शोषण के खिलाफ अपना सत्याग्रह यहीं से शुरू किया जिसने बाद में भारत की स्वतन्त्रंता में महत्वपूर्ण हथियार की भूमिका निभाई। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने अफ्रीका के विकास और साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में काफी भूमिका निभाई। इंदिरा गांधी के समय में भी इन समस्याओं पर यथावत् ध्यान दिया गया। भारत ने नामीबिया, और जिम्बावे, मोजांबिक तंजानिया को उनके सघंर्ष के दौर में महत्वपूर्ण मदद दी। बाद में राजीव गांधी की विदेश नीति को **एशिया–अफ्रो ब्रदरहुड** में युगान्तर–परिवर्तन माना जाता है। 1986 में उन्होंने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के हरारे सम्मेलन में भाग लेने के लिये अफ्रीका की यात्रा की इसी समय हरारे में अफ्रीकन फण्ड़ की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य अफ्रीकी नस्लवादी सरकार के खिलाफ संघर्ष को आर्थिक सहायता मुहैया करना था

1990 के दशक में बार–बार अफ्रीकी राजनेताओं का भारत दौरा और भारत का उन्हें अत्यधिक सम्मान व महत्त्व देना टिकाऊ रिश्तों की अभिव्यक्ति मानी जा सकती है। (1990 में नामीबिया के राष्ट्रपति नुजोमा की भारत यात्रा और उन्हें इंदिरा गांधी शांति निशस्त्रीकरण पुरस्कार से सम्मानित करना। 1995 में भारतीय राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा द्वारा अफ्रीकी देशों का दौरा इस और बढ़ते अन्य कदम सकारात्मकता को स्पष्ट करते है।

20वीं शताब्दी भारत व अफ्रीका के मध्य सम्बन्धों की एक स्वस्थ्य नींव बनाने में अत्यन्त कारगर साबित हुये, 21वीं शताब्दी में भारत का इस क्षेत्र में हित व भारत के लिये समाजिक, आर्थिक, राजनीति, रणनीति में इस क्षेत्र के महत्व की चर्चा करेगें ताकि यह क्षेत्र भारत सरकार की

विदेश नीति में कंहा तक महत्व रखता है और हांलहि में भारत द्वारा इस क्षेत्र के विकास में क्या भूमिका निभाई है तथा चीन की इस क्षेत्र में बढ़ती रणनीति पर चर्चा करेगें। वर्तमान विश्व व्यवस्था प्रतिस्पर्धी हो गई हे इसलिये चीन को काउंटर करने की रणनीति का वर्णन किया जा रहा है।

अफ्रीका का भारत के लिये महत्व

प्राचीन काल में ही भारत व अफ्रीका में घनिष्ठ सम्बंध रहा है। 21वीं शताब्दी में यह क्षेत्र भारत के लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिये बहुआयामी महत्व रखता है। एक लम्बे समय तक देश इस महाद्वीप के महत्व से अन्नभिग थे। परन्तू आज विज्ञान प्रगति के युग में इस क्षेत्र के खनिज संसाधनों की ओर विश्व के देशों का ध्यान गया। इसकी भू अवस्थिति आज सामारिक व आर्थिक हितों के लिये अत्यन्त महत्व रखती है। यह एशिया के देशों को यूरोप से जोड़ने का माध्यम है। इस क्षेत्र में अवस्थित स्वेज नहर व्यापार हेतू एक सुगम रास्ता माना जाता है इसी कारण यह लम्बे समय तक महाशक्तियों के लिये संघर्ष का क्षेत्र बनी रही।

भारत के लिये यह क्षेत्र ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामरिक व सांस्कृतिक रूप से महत्व रखता है जिसका वर्णन इस प्रकार है।

भारत–अफ्रीका राजीनतिक सम्बंधः

आधुनिक समय में भारत व अफ्रीका के सम्बन्धों का विकास दो स्त्तरों में विकसित हुआ है। पहला स्तर शीतयुद्ध का (1945–1990) इस समय भारत ने गुटनिरपेक्ष के अगुआ के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई सम्राज्यवाद, व उपनिवेशवाद का विरोध किया। तथा विभिन्न अफ्रीकी देशों ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को स्वीकारा इनमें मिस्त्र, घाना, इण्डोनेशिया व भूगोस्लाविया।

दूसरे स्तर पर भारत ने नव उपनिवेशवद के खिलाफ आवाज़ उठाई तथा इन देशों के साथ अब अपने सम्बंधों को विचारधारात्मक स्तर पर ले जाने का प्रयास किया। 21वीं शताब्दी में जब

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 04
February 2016

भारत एक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है तो उसे विश्व के देशों के सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है भारत अपनी राजनीति स्थिति मजबूत करने के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थाई सदस्यता का दावा 1992 से कर रहा है लगभग सभी अफ्रीकी देशों ने भारत की स्थाई सदस्यता के दावे को उपयुक्त माना तथा उसका समर्थन किया है। भारत की लगातार यू.एन.ओ. में अफ्रीकी देशों की दो स्थाई सीटों का समर्थक रहा है। मनमोहन सरकार के समय में भारत–अफ्रीका सपिट प्रारम्भ की गई 2015 में इसका तीसरा चक्र था भारत में सत्तारूढ़ चाहे कोई भी सरकार रही हो उसके लिये यह क्षेत्र प्रत्येक आयाम में महत्व का रहा है।

विश्व व्यापार संगठन (डब्लू.टी.ओ.) के दोहा वार्ता में विकासशील देशों के हितों की रक्षा करना भारता व अफ्रीका का समान उद्देश्य रहा है नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (एन.ई.ओ.) के तहत यह डब्ल्यू.टी.ओ. में सुधार के समर्थ रहे है, डब्ल्यू.टी.ओ. को विकासशील देशों के हितों के अनुकूल बनाना मुख्य उद्देश्य रहा है

भारत–अफ्रीका आर्थिक सम्बंध:

शीतयुद्धोतर युग में भारत ने अफ्रीका के साथ अपने आर्थिक हितों को बढ़ाने का प्रयास किया। यह क्षेत्र खनिज पदार्थों की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व रखताहै इसलिये भारत के लिये यह क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है जहां ऊर्जा आपूर्ति में इस क्षेत्र का महत्व है वहीं भारत के लिये यह एक बहुत बड़ा बाजार बन सकता है। आज बदलते विश्व परिदृश्य में एक देश के लिये किसी एक देश पर निर्भर होना सकारात्मक दृष्टिकोण नही माना जाता इसलिये अब भारत में प्रत्येक क्षेत्र में प्रतयेक देश के साथ सम्बंध बहुआयामी बनाने का प्रयास किया है। अब भारत तेज आयात का लगभग एक चौथाई अफ्रीका महाद्वीप से आयात कर रहा है नाईजीरिया और सूड़न तेल आपूर्ति करने वाले मुख्य देश है वहीं तजानिया आज यूरेनियम के भण्डार से युक्त देश है जो भारत के लिये अत्यनत लाभदायक हो सकता है।

International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 04
February 2016

व्यापार :

भारत–अफ्रीका व्यापार सम्बंध शुरू से ही साझेंदारी व सहयोगात्मक प्रकार के रहे है भारत ने कभी भी अफ्रीका के संसाधनों के दोहन के उद्देश्य से इन क्षेत्र में निवेश या व्यापार नही किया। वह यहां की अंवसंरचना व आधारभूत ढ़ाचों तथा कृषि को उन्नत करना होता है चीन की भांति भारत कभी भी इस क्षेत्र में नवउपनिवेशवाद प्रवृति को नही अपनाता। भारत–व अफ्रीका के मध्य व्यापार 2001–02 में 5.5 बिलियन डॉलर था 2007–08 में बढ़कर 50 विबलियन डॉलर हुआ वही 2016 तक 90 बिलियन डॉलर तक हो जायेगा।

सामरिक सम्बंध :

भारत–अफ्रीका महाद्वीप का संबंध हिन्दमहासागर क्षेत्र में शान्ति व सुरक्षा हेतू महत्वपूर्ण रहा है। नाम के माध्यम से शुरू से ही इस क्षेत्र में शान्ति का मुद्दा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाया गयाहै। 1971 में भारत तथा अफ्रीकी व अन्य विकासशील देशों ने हिन्दमहासागर क्षेत्र को शान्ति क्षेत्र घाषित करवाया। भारत अफ्रीकी देशों को समय–2 पर सैन्य सामग्री उपलब्ध कराता रहा है और इन देशों के सैनिकों को भारत में प्रशिक्षण दिया गया। वहीं दक्षिण अफ्रीका सैन्य सामग्री का निर्यातक देश है जो भारत के लिये महत्वपूर्ण है। वहीं चीन द्वारा इस क्षेत्र में लगातार बढना भारत के लिये सकारात्मक नही माना जा रहा हिन्दमहासागर में इसके सैन्य अडडे (स्प्रिंग ऑफ पर्ल्स पौलिसी) भारत के लिये चिन्ता का विषय है।

चीन यहां पर अपना लगातार प्रभाव बढ़ा रहा है। वह यहां के देशों में अपना बाजार बढ़ाने के नाम पर धीरे–धीरे सैन्य अड्ड़ों में तबदील कर रहा है जो भारत के लिये चिन्ताजनक हो सकता है। इसलिये भारत के लिये यह जरूरी है की वह इन देशों में अपना प्रभाव बढ़ाये।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से ही भारत का अफ्रीकन देशों से अच्चछा संबंध रहा है स्वतन्त्रता के बाद भारत नें इन देशों से सकारात्मक सम्बन्धों की शरूआत की। भारत ने इन देशों की मुख्य समस्याओं, सम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई में मदद की तथा गुटनिरपेक्षता आन्दोलन में भारत ने अगुआ के रूप में इन देशों का नेतृत्व किया तथा आज इस आन्दोलन में यह देश मुख्य भूमिका निभा रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक मुद्दे पर इन देशों ने भारत की मदद की जैसे सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता के मामले में इन देशों ने भारत का सहयोग किया है। न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप में भारत की सदस्यता पर बल दिया है। अतः कहां जा सकता है कि इन देशों का भारत के लिये राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक रूप से अत्यन्त महत्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1– डा. बी.एल. फाड़िया प्रकाशन (साहित्य भवन)

2– क्रान्किल मैंगजीन अक्टूबर 2015

3– www.Internet.com

4– वी.पी.दत्त :– कदलती दूनिया भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

5– अरूणोदय वाजपेयी : समकालीन विश्व और भारत प्रमुख मुद्दे व चुनौतियां। प्रकाशन (पिर्यसन) – नई दिल्ली।